8

भजन बिन यों ही जनम गंवायो

पानी पैल्या पाल न बांधी, फिर पीछैं पछतायो ।
भजन बिन यों ही जनम गंवायो ।टेक॥

रामा मोह भये दिन खोबत, आशा पाश बंधायो ।
जप तप संयम दान न दीनों, मानुष जन्म हरायो ।
भजन बिन यों ही जनम गंवायो ॥1॥

देह शीश जब कांपन लागी, दसन चलाचल थायो ।
लागी आग बुझावन कारन, चाहत कूप खुदायो ।
भजन बिन यों ही जनम गंवायो ॥2॥

काल अनादि गंवायो भ्रमता, कबहूँ न थिर चित ल्यायो ।
हरी, विषय सुख भरम भुलानो, मृग तृष्णा वश धायो ।
भजन बिन यों ही जनम गंवायो ॥3 ॥

हे आतमराम! तूने भक्ति के बिना अपना जीवन यूं ही बर्बाद कर दिया। तूने पानी (बाढ़) आने के पहले पाल (सीमा) नहीं बांधी और फिर बाद में पछताते रहे ॥टेक॥

हे आत्माराम! तुमने मोह के वश होकर अपने कई भव खराब कर लिए और इच्छा रूपी बंधन में बंधे रहे। तुमने जाप–तप, संयम आदि नहीं किया, दान नहीं दिया और मनुष्य जन्म को बर्बाद किया। तुमने भक्ति के बिना यूं ही जन्म को खो दिया ॥1॥

हे चेतन! जीवन के अंत में तुम्हारा शरीर और सर जब कांपने लगा और जब मृत्यु नजदीक आ गई फिर तू उपाय करता है मानो तुम आग लगने पर तुरंत ही कुआँ खोदकर उसके पानी से आग बुझाना चाहते हो। तुमने भगवान का गुणगान किये बिना यूं ही जन्म खो दिया है ॥2॥

हे चेतनराम! तुमने अपना अनंत काल संसार में भ्रमण करते हुए खो दिया और कभी भी आत्मा का ध्यान नहीं किया। जिस तरह जंगल में मृग, तृष्णा के वश होकर दौड़ता रहता है इसी तरह तुम विषयों में सुख मानकर आत्मा को भूल गये। तुमने भगवान का भजन किए बिना ही जीवन को बर्बाद कर लिया ॥3॥